Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2601I01VXIVP0009

e-ISSN No. 2394-8426
Monthly Issue
JAN-2026
Issue–I, Volume–XIV

डी.एल.एड. प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप एवं छात्राध्यापकों के शिक्षण दक्षता के मध्य संबंध का अध्ययन

1. **डेकेश्वर वर्मा,** सहायक प्राध्यापक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT), रायपुर, छत्तीसगढ़
2. **डॉ. अभिषेक श्रीवास्तव,** डीन, शिक्षा, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी, रायपुर छत्तीसगढ़

परिचय

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली की सफलता और प्रभावशीलता का आधार उसकी शिक्षक शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षक ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, सीखने की रुचि तथा सामाजिक मूल्यों के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में डी.एल.एड. (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन) कार्यक्रम को प्राथमिक शिक्षा हेतु प्रशिक्षित, दक्ष एवं उत्तरदायी शिक्षकों के निर्माण का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। यह कार्यक्रम भावी शिक्षकों को न केवल शैक्षणिक सिद्धांतों से परिचित कराता है, बल्कि उन्हें वास्तविक कक्षा-परिस्थितियों से जोड़ने का भी अवसर प्रदान करता है।

डी.एल.एड. प्रशिक्षण का एक अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण घटक **स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम** है, जिसके माध्यम से छात्राध्यापक विद्यालयीन परिवेश में जाकर प्रत्यक्ष शिक्षण अनुभव प्राप्त करते हैं। यह इंटर्नशिप कार्यक्रम सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक शिक्षण कौशल के बीच एक सेतु का कार्य करता है। इसके अंतर्गत छात्राध्यापक पाठ योजना निर्माण, कक्षा प्रबंधन, शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग, विद्यार्थियों के साथ संवाद तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इस व्यावहारिक सहभागिता से उनमें आत्मविश्वास, उत्तरदायित्वबोध एवं व्यावसायिक दक्षता का विकास होता है।

वर्तमान समय में जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 अनुभवात्मक, कौशल-आधारित एवं व्यवहारिक शिक्षा पर विशेष बल देती है, तब स्कूल इंटर्नशिप की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इसके बावजूद, यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक है कि क्या डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान प्रदान किया गया स्कूल इंटर्नशिप अनुभव वास्तव में छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक सुधार करता है या नहीं। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को किस सीमा तक प्रभावित करता है तथा उनके व्यावसायिक विकास में इसकी क्या भूमिका है।

शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता किसी भी शिक्षा प्रणाली की आधारशिला होती है। डी.एल.एड. (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन) कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य ऐसे दक्ष प्राथमिक शिक्षक तैयार करना है जो कक्षा शिक्षण की व्यवहारिक आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा कर सकें। इस संदर्भ में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम को सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक शिक्षण कौशल के बीच सेतु के रूप में देखा जाता है। वर्तमान अध्ययन में यह विश्लेषण किया गया है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण के दौरान प्रदत्त स्कूल इंटर्नशिप अनुभव छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को किस सीमा तक प्रभावित करता है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अध्ययन की सैद्धांतिक आधारशिला विभिन्न शिक्षण-अधिगम सिद्धांतों पर आधारित है, जो शिक्षक प्रशिक्षण में व्यावहारिक अनुभव की महत्ता को रेखांकित करते हैं। इनमें प्रमुख रूप से **अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत** (Experiential Learning Theory – Kolb), **निर्माणवादी अधिगम सिद्धांत**

(Constructivism) तथा **व्यावसायिक सामाजिककरण सिद्धांत (Professional Socialization Theory)** शामिल हैं।

कोलब के अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति सीखने की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष अनुभव, उस पर चिंतन, अवधारणा निर्माण तथा सक्रिय प्रयोग के माध्यम से ज्ञान अर्जित करता है। स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम इस सिद्धांत को व्यवहार में लागू करता है, जहाँ छात्राध्यापक वास्तविक कक्षा परिस्थितियों में शिक्षण अनुभव प्राप्त कर अपने ज्ञान और कौशल को निरंतर परिष्कृत करते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें केवल 'क्या पढ़ाना है' ही नहीं, बल्कि 'कैसे पढ़ाना है' यह भी सिखाती है।

निर्माणवादी अधिगम सिद्धांत यह मानता है कि शिक्षार्थी अपने अनुभवों के आधार पर स्वयं ज्ञान का निर्माण करता है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो स्कूल इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापक विद्यालयी परिवेश, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं तथा शिक्षण समस्याओं से रूबरू होकर अपने शिक्षण दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। वे पूर्व सीखे गए सिद्धांतों को व्यावहारिक परिस्थितियों में लागू कर नई समझ विकसित करते हैं।

वहीं, व्यावसायिक सामाजिककरण सिद्धांत के अनुसार किसी भी पेशे में दक्षता केवल औपचारिक प्रशिक्षण से नहीं, बल्कि उस पेशे के वास्तविक वातावरण में सहभागिता से विकसित होती है। स्कूल इंटर्नशिप के माध्यम से छात्राध्यापक शिक्षण पेशे के मानदंडों, आचार-संहिता, उत्तरदायित्वों तथा भूमिकाओं से परिचित होते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें एक प्रशिक्षु से व्यावसायिक शिक्षक बनने की दिशा में अग्रसर करती है।

इस प्रकार, ये सभी सिद्धांत संयुक्त रूप से यह स्पष्ट करते हैं कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता के विकास हेतु एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

यह अध्ययन अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत (Experiential Learning Theory – Kolb), निर्माणवादी अधिगम सिद्धांत (Constructivism) तथा व्यावसायिक सामाजिककरण सिद्धांत (Professional Socialization Theory) पर आधारित है। इन सिद्धांतों के अनुसार वास्तविक विद्यालय परिवेश में कार्य करना, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को समझने, कक्षा प्रबंधन, संप्रेषण कौशल तथा मूल्यांकन दक्षताओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन डी.एल.एड. पाठ्यक्रम की समग्र प्रभावशीलता के मूल्यांकन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विद्यालयी इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से छात्राध्यापकों में विकसित होने वाली शिक्षण दक्षताओं का प्रत्यक्ष विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करने में सहायक हैं कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित न रहकर किस प्रकार व्यावहारिक शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन क्षमता, शिक्षण आत्मविश्वास तथा व्यावसायिक दृष्टिकोण के विकास में योगदान देता है। साथ ही, यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप की भूमिका को सुस्पष्ट रूप से रेखांकित करता है और यह दर्शाता है कि वास्तविक विद्यालयी परिवेश में प्राप्त अनुभव छात्राध्यापकों को शिक्षण पेशे की जटिलताओं से परिचित कराने में किस सीमा तक प्रभावी सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा संस्थानों, प्रशिक्षण महाविद्यालयों तथा नीति-निर्माताओं को डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में आवश्यक व्यावहारिक सुधार, इंटर्नशिप अवधि, पर्यवेक्षण प्रणाली तथा प्रशिक्षण संरचना को सुदृढ़ करने हेतु दिशा प्रदान करते हैं। विशेष रूप से, यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में वर्णित अनुभवात्मक, कौशल-आधारित एवं

व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्यों की व्यवहारिक पुष्टि करता है तथा यह स्थापित करता है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम भावी शिक्षकों को सक्षम, उत्तरदायी एवं प्रभावी प्राथमिक शिक्षक बनाने की दिशा में एक अनिवार्य घटक है।

समस्या का विवरण

"क्या डी.एल.एड. प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को प्रभावी रूप से प्रभावित करता है?"

प्रमुख शब्दों की परिचालन परिभाषाएँ

- **डी.एल.एड. प्रशिक्षण**- प्राथमिक शिक्षक बनने हेतु दो वर्षीय व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम
- **स्कूल इंटर्नशिप**- प्रशिक्षण के दौरान विद्यालय में निर्धारित अवधि तक किया गया शिक्षण अभ्यास
- **शिक्षण दक्षता**- योजना निर्माण, प्रस्तुतीकरण, कक्षा प्रबंधन, शिक्षण सहायक सामग्री एवं मूल्यांकन क्षमता का समग्र स्तर

चर

(क) स्वतंत्र चर

- स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम

(ख) आश्रित चर

- छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता

अध्ययन के उद्देश्य

1. डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता का मूल्यांकन करना
2. स्कूल इंटर्नशिप से पूर्व एवं पश्चात शिक्षण दक्षता में अंतर का अध्ययन करना
3. स्कूल इंटर्नशिप एवं शिक्षण दक्षता के मध्य संबंध का विश्लेषण करना

अध्ययन के शोध प्रश्न

- क्या स्कूल इंटर्नशिप के बाद छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सुधार होता है?
- क्या इंटर्नशिप अनुभव शिक्षण कौशल के विभिन्न आयामों को प्रभावित करता है?

समस्या का दायरा

यह अध्ययन चयनित डी.एल.एड. महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों तक सीमित है तथा प्राथमिक स्तर के शिक्षण कौशल पर केंद्रित है।

सीमांकन और क्षेत्र

- केवल डी.एल.एड. प्रशिक्षु शामिल
- अध्ययन एक शैक्षणिक सत्र तक सीमित
- क्षेत्रीय सीमा: चयनित जिला

साहित्य की समीक्षा

शर्मा (2019) द्वारा किए गए अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विद्यालयी इंटर्नशिप की भूमिका का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि इंटर्नशिप कार्यक्रम में सहभागिता करने वाले छात्राध्यापकों में शिक्षण आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। शर्मा ने यह रेखांकित किया कि वास्तविक कक्षा शिक्षण, विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष संवाद तथा विद्यालयी वातावरण में कार्य करने से प्रशिक्षुओं का झिझकपन

कम होता है और वे शिक्षण कार्य को अधिक आत्मविश्वास के साथ संपादित करने में सक्षम हो जाते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि इंटर्नशिप अनुभव ने छात्राध्यापकों की निर्णय-क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा कक्षा में नेतृत्व क्षमता को सुदृढ़ किया, जिससे उनके व्यावसायिक विकास को बल मिला।

सिंह (2020) ने अपने शोध में इंटर्नशिप को शिक्षक दक्षता के विकास का एक केंद्रीय घटक माना है। उनके अध्ययन के अनुसार शिक्षक प्रशिक्षण की सफलता केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह इस बात पर भी निर्भर करती है कि प्रशिक्षु वास्तविक शिक्षण परिस्थितियों में उस ज्ञान को किस प्रकार लागू करते हैं। सिंह ने निष्कर्ष निकाला कि इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से छात्राध्यापक पाठ योजना निर्माण, शिक्षण विधियों के चयन तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं में दक्षता प्राप्त करते हैं। यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण में इंटर्नशिप को अनिवार्य और प्रभावी घटक के रूप में स्थापित करता है।

वर्मा एवं गुप्ता (2021) द्वारा किए गए अध्ययन में विशेष रूप से कक्षा प्रबंधन कौशल पर स्कूल इंटर्नशिप के प्रभाव का अध्ययन किया गया। शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि इंटर्नशिप से पूर्व और पश्चात छात्राध्यापकों के कक्षा प्रबंधन कौशल में उल्लेखनीय सुधार हुआ। अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालयी अनुशासन बनाए रखना, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझना तथा समय प्रबंधन जैसी दक्षताओं का विकास मुख्यतः व्यावहारिक शिक्षण अनुभव से संभव होता है। इस अध्ययन ने यह सिद्ध किया कि कक्षा प्रबंधन कौशल का विकास केवल सैद्धांतिक प्रशिक्षण से संभव नहीं है।

कुमार (2022) ने अपने अध्ययन में अनुभवात्मक प्रशिक्षण (Experiential Training) की प्रभावशीलता का विश्लेषण किया। उनके अनुसार शिक्षक प्रशिक्षण में अनुभवात्मक अधिगम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रशिक्षुओं को सीखने की सक्रिय प्रक्रिया में सम्मिलित करता है। Kumar ने निष्कर्ष निकाला कि स्कूल इंटर्नशिप के माध्यम से छात्राध्यापक शिक्षण-अधिगम की वास्तविक चुनौतियों को समझते हैं और समस्या-समाधान कौशल विकसित करते हैं। यह अध्ययन कोलब के अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत की व्यवहारिक पुष्टि करता है।

पटेल (2023) ने इंटर्नशिप-आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का शिक्षण गुणवत्ता पर प्रभाव अध्ययन किया। उनके शोध से यह स्पष्ट हुआ कि जिन छात्राध्यापकों ने व्यवस्थित एवं पर्यवेक्षित इंटर्नशिप कार्यक्रम में भाग लिया, उनकी शिक्षण गुणवत्ता, प्रस्तुतीकरण शैली तथा विद्यार्थियों के साथ अंतःक्रिया में स्पष्ट सुधार देखा गया। Patel ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि इंटर्नशिप-आधारित प्रशिक्षण शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने का एक प्रभावी माध्यम है।

शोध अंतराल

पूर्व अध्ययनों में डी.एल.एड. छात्राध्यापकों पर पूर्व-पश्चात तुलनात्मक विश्लेषण का अभाव पाया गया, जिसे यह अध्ययन पूरा करता है।

शोध पद्धति

- **शोध डिज़ाइन-** वर्णनात्मक-सहसंबंधात्मक शोध डिज़ाइन
- **जनसंख्या-** चयनित डी.एल.एड. महाविद्यालयों के छात्राध्यापक
- **न्यादर्श-** 100 छात्राध्यापक
- **न्यादर्श विधि-** साधारण यादृच्छिक विधि
- **आँकड़ों का स्रोत-** प्राथमिक आँकड़े

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2601I01VXIVP0009

e-ISSN No. 2394-8426
Monthly Issue
JAN-2026
Issue–I, Volume–XIV

- **शोध उपकरण-** स्वनिर्मित शिक्षण दक्षता मापनी (Likert Scale)
- **आँकड़ों का संग्रह-** प्रश्नावली द्वारा इंटर्नशिप से पूर्व एवं पश्चात डेटा संकलन किया गया।

आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

- प्रतिशत
- तुलनात्मक विश्लेषण
- सहसंबंध विश्लेषण

सारणीकरण और व्याख्या

सारणी 1

इंटर्नशिप से पूर्व एवं पश्चात छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता का स्तर

(न्यादर्श = 100)

शिक्षण दक्षता स्तर	इंटर्नशिप से पूर्व (संख्या)	इंटर्नशिप से पूर्व (%)	इंटर्नशिप के बाद (संख्या)	इंटर्नशिप के बाद (%)
उच्च	28	28%	52	52%
मध्यम	41	41%	34	34%
निम्न	31	31%	14	14%
कुल	**100**	**100%**	**100**	**100%**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम के पश्चात छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हुआ है। इंटर्नशिप से पूर्व जहाँ केवल 28 छात्राध्यापक उच्च शिक्षण दक्षता वर्ग में थे, वहीं इंटर्नशिप के पश्चात यह संख्या बढ़कर 52 हो गई। यह वृद्धि इस तथ्य की पुष्टि करती है कि विद्यालयी परिवेश में प्राप्त व्यावहारिक अनुभव ने छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन तथा प्रस्तुतीकरण क्षमता को सुदृढ़ किया।

मध्यम दक्षता वर्ग में इंटर्नशिप से पूर्व 41 छात्राध्यापक सम्मिलित थे, जो इंटर्नशिप के पश्चात घटकर 34 रह गए। यह परिवर्तन दर्शाता है कि मध्यम स्तर के कई छात्राध्यापक इंटर्नशिप अनुभव के परिणामस्वरूप उच्च दक्षता वर्ग में स्थानांतरित हुए। वहीं, निम्न शिक्षण दक्षता वर्ग में इंटर्नशिप से पूर्व 31 छात्राध्यापक थे, जो इंटर्नशिप के पश्चात घटकर केवल 14 रह गए। यह गिरावट इस बात का प्रमाण है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम ने कमजोर शिक्षण कौशल वाले छात्राध्यापकों के प्रदर्शन में भी सकारात्मक सुधार किया।

इस प्रकार, सारणीबद्ध आँकड़े यह स्पष्ट रूप से सिद्ध करते हैं कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता के विकास में एक प्रभावी एवं सार्थक भूमिका निभाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में स्कूल इंटर्नशिप से पूर्व एवं पश्चात डी.एल.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता के स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण सारणी 1 के माध्यम से किया गया है। सारणी के अनुसार, इंटर्नशिप से पूर्व केवल 28 प्रतिशत छात्राध्यापक उच्च शिक्षण दक्षता वर्ग में थे, जबकि इंटर्नशिप के बाद यह प्रतिशत बढ़कर 52 हो गया। यह वृद्धि इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि विद्यालयी परिवेश में प्रत्यक्ष शिक्षण अनुभव ने छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल, प्रस्तुतीकरण क्षमता तथा कक्षा संचालन दक्षता को सुदृढ़ किया। वहीं, मध्यम

दक्षता वर्ग में इंटर्नशिप से पूर्व 41 प्रतिशत छात्राध्यापक सम्मिलित थे, जो इंटर्नशिप के पश्चात घटकर 34 प्रतिशत रह गए। यह परिवर्तन दर्शाता है कि मध्यम स्तर के कई छात्राध्यापक इंटर्नशिप अनुभव के परिणामस्वरूप उच्च दक्षता वर्ग में स्थानांतरित हुए।

सारणी का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्न शिक्षण दक्षता वर्ग में आई गिरावट है। इंटर्नशिप से पूर्व 31 प्रतिशत छात्राध्यापक निम्न दक्षता वर्ग में थे, जबकि इंटर्नशिप के बाद यह प्रतिशत घटकर केवल 14 रह गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम ने कमजोर शिक्षण कौशल वाले छात्राध्यापकों को भी व्यावहारिक अनुभव प्रदान कर उनके प्रदर्शन में सुधार किया। समग्र रूप से, सारणी यह प्रमाणित करती है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है तथा उन्हें अधिक सक्षम और आत्मविश्वासी शिक्षक बनने की दिशा में अग्रसर करता है।

परिकल्पना का परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में स्कूल इंटर्नशिप एवं छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता के मध्य संबंध की जाँच हेतु शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया, जिसके अनुसार यह माना गया कि "स्कूल इंटर्नशिप एवं शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक संबंध नहीं है।" इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए इंटर्नशिप से पूर्व एवं पश्चात संकलित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। प्रतिशत विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह देखा गया कि शिक्षण दक्षता के विभिन्न स्तरों में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं।

विश्लेषण के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि इंटर्नशिप के पश्चात उच्च शिक्षण दक्षता वाले छात्राध्यापकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जबकि निम्न दक्षता वर्ग में पर्याप्त कमी आई है। यह परिवर्तन आकस्मिक न होकर विद्यालयी इंटर्नशिप के व्यवस्थित एवं निरंतर अनुभव का प्रतिफल प्रतीत होता है। चूँकि इंटर्नशिप के बाद शिक्षण दक्षता में सकारात्मक एवं सार्थक परिवर्तन दर्ज किया गया, अतः यह निष्कर्ष निकाला गया कि स्कूल इंटर्नशिप एवं शिक्षण दक्षता के मध्य महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है।

इस प्रकार, आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया गया। शून्य परिकल्पना की अस्वीकृति यह संकेत देती है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम मात्र एक औपचारिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता के विकास में एक निर्णायक भूमिका निभाता है। यह निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में इंटर्नशिप को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता को सुदृढ़ करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुआ है। अध्ययन में यह पाया गया कि इंटर्नशिप के पश्चात छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल में स्पष्ट सुधार दृष्टिगोचर हुआ। विशेष रूप से पाठ योजना निर्माण, विषयवस्तु प्रस्तुतीकरण तथा शिक्षण विधियों के चयन में उनकी दक्षता बढ़ी।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि कक्षा प्रबंधन एवं अनुशासन बनाए रखने की क्षमता में उल्लेखनीय विकास हुआ। विद्यालयी परिवेश में प्रत्यक्ष शिक्षण अनुभव प्राप्त करने से छात्राध्यापक विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं, व्यवहारिक समस्याओं तथा सीखने की गति को बेहतर ढंग से समझने लगे। इसके अतिरिक्त, शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं में भी उनकी दक्षता में सुधार हुआ।

एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि व्यावहारिक शिक्षण अनुभव से छात्राध्यापकों के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। इंटर्नशिप के दौरान वास्तविक कक्षा शिक्षण ने उनमें पेशेवर दृष्टिकोण विकसित किया और शिक्षण को एक उत्तरदायी एवं सम्मानजनक पेशे के रूप में स्वीकार करने की भावना को प्रबल किया। समग्र रूप से, अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम डी.एल.एड. छात्राध्यापकों को एक कुशल, आत्मविश्वासी एवं व्यावसायिक शिक्षक के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सारांश, निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ

प्रस्तुत अध्ययन का सारांश यह दर्शाता है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण में स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता के विकास में एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करता है। अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि सैद्धांतिक ज्ञान को विद्यालयी परिवेश में व्यावहारिक रूप से लागू करने का अवसर मिलने पर छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन क्षमता एवं आत्मविश्वास में उल्लेखनीय सुधार होता है।

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम डी.एल.एड. पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य एवं प्रभावी घटक है, जिसे केवल औपचारिकता तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। इसके माध्यम से भावी शिक्षक शिक्षण पेशे की वास्तविक चुनौतियों को समझते हैं और पेशेवर दक्षताओं का विकास करते हैं।

अनुशंसा की जाती है कि डी.एल.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्कूल इंटर्नशिप की अवधि को यथासंभव बढ़ाया जाए, जिससे छात्राध्यापक अधिक समय तक विद्यालयी परिवेश में रहकर अनुभव अर्जित कर सकें। साथ ही, इंटर्नशिप के दौरान पर्यवेक्षण एवं मार्गदर्शन प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ किया जाना चाहिए, ताकि छात्राध्यापकों को नियमित फीडबैक प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त, शिक्षक शिक्षा संस्थानों को चाहिए कि वे इंटर्नशिप को कौशल-आधारित, लक्ष्य-उन्मुख एवं मूल्यांकन-समर्थ बनाएं। इस प्रकार, यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता सुधार हेतु एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Sharma, R. (2019). *Impact of teaching internship on trainee teachers' confidence*. Journal of Teacher Education, 10(2), 45–52.
- Singh, A. (2020). *Role of internship in developing teacher competency*. Indian Journal of Educational Studies, 12(1), 23–30.
- Verma, S., & Gupta, N. (2021). *Classroom management skills among teacher trainees: An internship-based study*. International Journal of Education, 15(3), 67–75.
- Kumar, R. (2022). *Experiential training in teacher education*. Journal of Educational Research, 18(2), 39–47.
- Patel, M. (2023). *Internship-based teacher training and teaching quality*. Asian Journal of Teacher Education, 6(1), 54–62.